उद्विकास (Evolution)

'उद्विकास' शब्द का प्रयोग सबसे पहले जीव-विज्ञान के क्षेत्र में चार्ल्स डार्विन (Charles Darwin) ने किया था। डार्विन के अनुसार उद्विकास की प्रक्रिया में जीव की

Scanned with CamScanner

संरचना सरलता से जटिलता (Simple to Complex) की ओर बढ़ती है। यह प्रक्रिया प्राकृतिक चयन (Natural Selection) के सिद्धान्त पर आधारित है। आरंभिक समाजशास्त्री हरबर्ट स्पेन्सर ने जैविक परिवर्तन (Biological Changes) की भाँति ही सामाजिक परिवर्तन को भी कुछ आन्तरिक शक्तियों (Internal Forces) के कारण संभव माना है और कहा है कि उद्विकास की प्रक्रिया धीरे-धीरे निश्चित स्तरों से गुजरती हुई पूरी होती है। संक्षेप में, उद्विकास की मान्यताओं को हम इस ढंग से प्रकट कर सकते हैं– आरंभ में सभी जीव या वस्तु का स्वरूप सरल होता है और उद्विकास की प्रक्रिया जैसे-जैसे आगे बढ़ती है उस वस्तु या जीव के निर्णायक अंग पृथक् और स्पष्ट रूप से अपना काम करते हैं।

उद्विकास की अवधारणा को स्पष्ट करते हुए मकीवर एवं पेज (1985: 522) ने लिखा है– "Evolution means more than growth." अर्थात् उद्विकास एक किस्म का विकास है। पर प्रत्येक विकास उद्विकास नहीं है क्योंकि विकास की एक निश्चित दिशा होती है, पर उद्विकास की कोई निश्चित दिशा नहीं होती है। किसी भी क्षेत्र में विकास करना उद्विकास कहा जाएगा। मकीवर एवं पेज ने बताया है कि उद्विकास सिर्फ आकार में ही नहीं बल्कि संरचना में भी विकास है। यदि समाज के आकार में वृद्धि नहीं होती है और वह पहले से ज्यादा आन्तरिक रूप से जटिल हो जाता है तो उसे उद्विकास कहेंगे। उद्विकास की प्रक्रिया को विकास नहीं कहा जा सकता है, क्योंकि विकास एक निश्चित दिशा में वृद्धि का नाम है। उसी तरह आकार की वृद्धि को विकास की संज्ञा नहीं दे सकते हैं। उद्विकास तो एक आन्तरिक प्रक्रिया है जो स्वतः प्राकृतिक नियमों से संचालित होती रहती है। वर्ण व्यवस्था का जाति व्यवस्था में परिवर्तित होना उद्विकास का एक उदाहरण है, क्योंकि वर्ण व्यवस्था की तुलना में जाति व्यवस्था में विकास के फलस्वरूप अधिक जटिलता आयी है। यह बात दूसरी है कि बहुत विद्वान यह स्वीकार नहीं करते हैं कि जाति व्यवस्था वर्ण व्यवस्था का ही विकसित रूप है।

प्रगति (Progress)

Scanned with CamScanner